कीस मानवतावादी अवार्ड समारोहः2013

दिनांक : 14 नवंबर,11.2013
समय : सुबह 11:00 बजे से

कीस मानवतावादी अवार्ड समारोहः2013 के पावन अवसर आमंत्रित मंचासीन समस्त विषिष्ट अतिथिगण! माताओं,बहनों और मीडिया के अधिकारीगण! आज मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस पावन अवसर पर मुझे कुछ बोलने का मौका मिला है।

''मानवीय मूल्यों एवं मानवता के संरक्षण''– के सिद्धांत पर स्थापित है भुवनेष्वर, ओडिषा का यह विष्वविख्यात कलिंग इंस्टीट्यूट आफ सोसल साइंसेज; 'कीस' जिसके संस्थापक डा अच्युत सामंत का अबतक का पूरा विदेह जीवन मानवता के कल्याण के लिए समर्पित जीवन है।इनकी यह व्यक्तिगत मान्यता है,अपने जीवन का कठोर अनुभव है कि षिक्षा के द्वारा ही विष्व से गरीबी का उन्मूलन हो सकता है। मित्रों!आज का युग ''सामान्य मानव का युग'' है जिसमें विष्व मानवता की रक्षा करना हमसब का।पावन कर्तव्य है।
'कीस मानवतावादी अवार्ड' 2008 से प्रतिवर्ष कीस अपने वार्षिक अवार्ड समारोह में प्रदान करते आ रहा है। गौरतलब है कि इस अवार्ड के विजेताओं का चयन एक उच्च स्तरीय जुरी करती है। यह अवार्ड उनको प्रदान किया जाता है जिनका योगदान विष्व सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण, उल्लेखनीय एवं प्रषंसनीय होता है।साथ ही साथ जिस व्यक्तित्व ने विष्व मानवता की निःस्वार्थ सेवा की है।
2012 में यह अवार्ड भूटान के माननीय प्रधानमंत्री श्री जिग्मी वाई थीन्ले को प्रदान किया गया। 2011 में इस अवार्ड से यू. के. उच्चतम न्यायालय के राष्ट्रपति लार्ड निकोलस एडीषन फिलिप्स को नवाजा गया । 2010 में इस अवार्ड के विजेता मेरुत के राष्ट्रपति सर अनिरुद जगन्नाथ रहे। 2009 में यह अवार्ड प्रख्यात षिक्षाविद् और चिकित्सक हेंसिया विष्वविद्यालय दक्षिण कोरिया के प्रेसिडेंट और संस्थापक डा हम की–सुन के नाम रहा। और 2008 में यह अवार्ड दक्षिण अफ्रीका नेषनल एसेंबली के सामाजिक विकास केन्द्रीय मंत्री सुश्री इदना बोमो मोलेवा को प्रदान किया गया।

2013 का ''कीस मानवतावादी अवार्ड'' 1984 के नोबेल षांति पुरस्कार विजेता डा डेसमण्ड पीलो टुटु को 14 नवंबर, बाल दिवस के पावन अवसर पर 'कीस' में प्रदान किया जा रहा है।

डा डेसमण्ड टुटु के विषय में ,इनके उल्लेखनीय सामाजिक कार्यों की प्रषंसा में जितना कहा जाय वह बहुत कम होगा। 1931 में जन्में आदरणीय टुटु जी एक ऐसे दक्षिण अफ्रीकी कार्यकर्ता हैं जिन्होंने रंगभेद के विरोध में पूरे विष्व में षंखनाद किया और समाजसेवा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई।सच तो यह भी है कि इन्होंने एडस्, टीबी जैसी जानलेवा बीमारियों से सामान्य लोगों को बचाने, गरीबी दूर करने, रंग–भेद आदि मिटाने में अभूतपूर्व सहयोग दिया इनके खिलाफ अभियान छेड़कर।इनकी अपनी कर्मठता,त्यागी और तपस्वी सामाजिक जीवन के बदौलत 1984 में इन्हें विश्व का सर्वश्रेष्ट नोबेल षांति पुरस्कार मिला। यहां यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि इन्हें अनेकानेक सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

हमारे लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि विष्व विख्यात षैक्षिक संस्थानों कीट और कीस के संस्थापक डा अच्युत सामंत से मिलने का मुझे आज मौका मिला है।मेरा यह सौभाग्य होगा कि आज मैं विष्वविख्यात व्यक्तित्व के बारे में कुछ बोलूं।

आज के भौतिकवादी युग में विष्व के तमाम धनाढ्य एवं अमीर लोगों में जहां अधिक से अधिक धनोपार्जन की होड़–सी मची हुई है। आज के इस प्रतियोगिता के युग में दौलत, ताकत और बड़े ओहदे की व्यक्तिगत स्पर्धा में कल, बल और छल का गलत तरीके से इस्तेमाल सभी एक दूसरे से आगे निकला चाहते हैं।आज इनमें से कोई भी भामाषाह अपने अन्दर झांककर यह नहीं देखता कि विष्व के पददलित, सबसे उपेक्षित एवं षोषित गरीब लोगों को कैसे समाज के विकास की मुख्य धारा के साथ जोड़ा जाए? यह काम अगर कोई कर रहा है तो वह हैं कीट–कीस के संस्थापक डा अच्युत सामंतजी।कमाल का इनका सौम्य एवं षांत व्यक्तित्व है।ये सरलता एवं सहजता के साक्षात प्रतिमूर्ति हैं।सबसे पहले इनके बहुमुखी प्रतिभा को मैं नमन करता हूं जो हमसब के लिए अनुकरणीय एवं वंदननीय है।

इन्होंने अपने सामाजिक एवं नैतिक दायित्व के तहत 1993 में कुल 125 आदिवासी अनाथ बच्चों को को लेकर एक आदिवासी आवासीय विद्यालय कलिंग इंस्टीट्यूट और सोसलसाइंसेज; कीस की स्थापना की ।आज कीस के छात्र–छात्राओं की कुल 20,000 हजार से अधिक की है।कीस हर तरह से इन आदिवासी बच्चों का अपना वास्तविक घर बन चुका है। हमें यह जानकर खुशी हुई कि यहां पर ओडिषा के कुल 64 प्रकार की आदिवासी जाति एवं कुल 13 प्रकार की आदिवासी जनजाति के बच्चे के.जी. से पी.जी. तक बिलकुल निःषुल्क तमाम आवासीय सुविधाओं सहित मुफ्त षिक्षा प्राप्त करते हैं।यहां के प्रत्येक बच्चे के उत्तम स्वास्थ्य का खास ध्यान रखा जाता है।यहां पर बच्चों को हर प्रकार की आवासीय सुविधाएं, अत्याधुनिक पठन–पाठन की सुविधाएं निःषुल्क उपलब्ध हैं। यहां के बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ उनके जीविकोपार्जन के लिए भी अनेक प्रकार के पेषेवर प्रषिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

आज कीस एक आदर्ष षैक्षिक संस्थान बन चुका है जहां पर बच्चों को यूएनटीपी, यूएनआईसीपीएफ, यूनिस्को, यूएनएफपीए और यूएस फेडरल सरकार की अन्यान्य परि योजनाओं का लाभ मिल रहा है। कीस आज आधुनिक तीर्थस्थल बन चुका है।सच्चे मानव निर्माण का एक अनोखा कारखाना बन चुका है जहां पर चरित्रवान,जिम्मेवार और सच्चा देषभक्त मानव तैयार होता है।और यहीं कारण है कि जिसे देखने के लिए,जिसके संस्थापक से मिलने के लिए देष–विदेष के हजारों षिक्षाविद्, बुद्धिजीवी, महापुरुष, टेक्नोक्रेट, उद्योगपति, समाजसेवी, नोबेल पुरस्कार विजेता, वैज्ञानिक, मेगासेसे अवार्ड विजेता, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता, विधिवेत्ता,राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल आदि कीस आते हैं। कीस की उन्मुक्त कण्ठ से सराहना करते हैं और अपने जीवन को धन्य करते हैं डा अच्युत सामंत के दर्षन कर इनकी विष्वविख्यात संस्था कीट–कीस के प्रबंधन एवं पठन–पाठन को देखकर।

आज इस पावन अवसर पर कीट और कीस के संस्थापक डा सामंत को उनके महान सामाजिक कार्यों के लिए मैं उन्हें तहेदिल से बधाई देता हूं और इनकी दोनों ही संस्थाओं कीट–कीस के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

बहुत–बहुत धन्यवाद!